विश्व हिंदी समाचार

(विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक प्रकाशन)

www.vishwahindi.com

वर्ष : 5 अंक : 19 सितंबर, 2012

9वां विश्व हिंदी सम्मेलन : दक्षिण अफ़्रीका में संपन्न

गांधी ग्राम (सैंडटन कन्वेंशन सेंटर) में विश्व भर के हिंदी प्रेमियों का महाकुंभ, विश्व हिंदी सम्मेलन का 9वां संस्करण 22 से 24 सितंबर, 2012 तक चला ।

विस्तृत रिपोर्ट पृ.2–4

हिंदी दिवस 2012

14 सितंबर को भारत एवं मॉरीशस सहित विश्व भर में हिंदी दिवस का आयोजन किया गया । मॉरीशस में भारतीय उच्चायोग, हिंदी संगठन, आर्य सभा तथा महात्मा गांधी संस्थान के हिंदी विभाग द्वारा कई गतिविधियों का भी आयोजन हुआ । सूरीनाम, ओहियो, श्री लंका, चीन, कुवैत तथा सेंट पिटर्सबर्ग में भी बढ़चढ़कर हिंदी दिवस का आयोजन हुआ । अधिक जानकारी के लिए सूचना पत्र में पृ 5-7 पर पढ़ें ।

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी ब्लॉगर सम्मेलन

लखनऊ में आयोजित हुआ अंतर्राष्ट्रीय हिंदी ब्लॉगर सम्मेलन ।

शेष पृ.8

'साइबर मीडिया का प्रभाव' विषय पर एक गोष्ठी *पृ.9*

डॉ पीतांबर दत्त बड़थ्वाल स्मृति दिवस *पृ.10*

'मृत्योर्मामृतम गमय' का विमोचन *पृ.11*

9वां विश्व हिंदी सम्मेलन
जोहान्सबर्ग, दक्षिण अफ़्रीका

भारत की विदेश राज्यमंत्री श्रीमती प्रनीत कौर तथा मॉरीशस के कला एवं संस्कृति मंत्री मुकेश्वर चुनी द्वारा दीप प्रज्वलन

जोहान्सबर्ग, दक्षिण अफ़्रीका और महात्मा गांधी के बीच बहुत गहरा रिश्ता रहा है क्योंकि यह स्थान वह प्रयोगशाला का जिसने बैरिस्टर मोहनदास करमचंद गांधी को महात्मा गांधी बनाया । यहाँ स्थित गांधी ग्राम (सैंडटन कन्वेंशन सेंटर) में हिंदी प्रेमियों का महाकुंभ, विश्व हिंदी सम्मेलन का 9वां संस्करण 22 सितंबर, 2012 को प्रारंभ हुआ । इस भव्य आयोजन में दुनिया भर के हिंदी प्रेमियों तथा हिंदी सेवियों ने भाग लिया । ''भाषा की अस्मिता और हिंदी का वैश्विक संदर्भ'' सम्मेलन का मुख्य विषय रहा । सम्मेलन के दौरान कुल 9 शैक्षिक सत्र प्रस्तुत किए गए जिनके लिए अलग-अलग स्थल सुनिश्चित किए गए थे और उनके नाम भी ऐसे रखे गए थे जिनसे गांधी जी के सिद्धांत और उनसे जुड़ी स्मृतियाँ ताज़ा हो गईं (शांति कक्ष, अहिंसा कक्ष, नीति कक्ष और न्याय कक्ष)। ज्ञात हो कि हिंदी सम्मेलन के आयोजन का पहला विचार महात्मा गांधी की कर्मभूमि वर्धा में ही आया था, जब राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा ने इसकी परिकल्पना की थी और नागपुर में विश्व हिंदी सम्मेलन पहली बार के लिए आयोजित हुआ था ।

उद्घाटन समारोह तथा प्रारंभिक सत्र

उद्घाटन समारोह नेल्सन मंडेला सभागार में हुआ जिसकी अध्यक्षता भारत की विदेश राज्यमंत्री श्रीमती प्रनीत कौर ने की । उद्घाटन सत्र का प्रारंभ स्वागत गान से हुआ जिसकी प्रस्तुति भारतीय सांस्कृतिक केंद्र जोहान्सबर्ग एवं डरबन के विद्यार्थियों ने की । इसके पश्चात दक्षिण अफ़्रीका की कोजीनाथी टोली द्वारा पारंपरिक गान की प्रस्तुति हुई जिसके बाद श्रीमती प्रनीत कौर एवं अन्य मंचस्थ अतिथियों द्वारा दीप-प्रज्ज्वलन से उद्घाटन की औपचारिक शुरुआत हुई ।

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के महानिदेशक सुरेश गोयल ने इस अवसर पर कहा कि हिंदी भारत की सामासिक संस्कृति का प्रतीक है । हिंदी अब एक अंतर्राष्ट्रीय भाषा का रूप ले चुकी है । हिंदी भाषा की ताकत को अब पूरी दुनिया समझने लगी है । इसके पश्चात दक्षिण अफ़्रीका में भारत के राजदूत श्री वीरेंद्र गुप्ता ने सम्मेलन के विभिन्न सत्रों की संक्षिप्त जानकारी दी । विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव श्रीमती पूनम जुनेजा ने कहा कि मॉरीशस स्थित विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना 1975 में नागपुर में आयोजित प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन में पारित प्रस्ताव द्वारा हुई इसीलिए विश्व हिंदी सम्मेलन और विश्व हिंदी सचिवालय का बहुत गहरा भावनात्मक संबंध है ।

दक्षिण अफ़्रीका में भारतीय उच्चायुक्त वीरेंद्र गुप्ता ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि विश्व हिंदी सम्मेलनों ने हिंदी भाषा की बहुआयामिता को विश्वपटल पर रखने का प्रयास किया है । हिंदी के बढ़ते कदमों का दुनिया में स्वागत हो रहा है । उन्होंने वैश्विक संदर्भ में हिंदी भाषा के आदान-प्रदान के साथ ही युवा पीढ़ी को हिंदी से जोड़ने की बात की । इसके बाद उद्घाटन समारोह के अध्यक्ष, मुख्य अतिथि एवं अन्य मंचस्थ अतिथियों द्वारा विश्व हिंदी सम्मेलन स्मारिका (भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली से प्रकाशित तथा रवींद्र कालिया एवं संपादक मंडल द्वारा संपादित) तथा गगनांचल पत्रिका (भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, नई दिल्ली से प्रकाशित और अशोक जजूरिया एवं अमित माथुर द्वारा संपादित) के विशेषांक का विमोचन किया गया । इसके पश्चात दक्षिण अफ़्रीका स्थित हिंदी शिक्षा संघ की अध्यक्ष मालती रामबली ने इस सम्मेलन के आयोजन के बाद हिंदी के सहयोग और विकास के बढ़ने वाले अवसरों पर बात की और यह आशा जताई कि इस सम्मेलन के आयोजन के बाद दक्षिण अफ़्रीका की सरकार हिंदी को नई दृष्टि से देखेगी । भारत के विदेश मंत्रालय के सचिव (पश्चिम) मधुसूदन गणपति ने स्वयं के काम-काज में हिंदी को महत्व देने के साथ ही कहा कि यदि भारतेंदु हरिश्चंद्र के निज भाषा उन्नति अहै मंत्र को दैनिक जीवन में उतारें तो यह इस सम्मेलन की सही दिशा एवं उद्देश्य होगा । इस तरह पूर्व सांसद, गांधीवादी विचारधारा की पोषक और राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की प्रपौत्री इला गांधी, संसदीय राजभाषा समिति के पूर्व उपाध्यक्ष एवं विश्व हिंदी सम्मेलन की संचालन समिति के अध्यक्ष व सांसद सत्यव्रत चतुर्वेदी, दक्षिण अफ़्रीका के उप विदेशमंत्री मारियस फ़्रांस्मन, मॉरीशस के प्रतिनिधि मंडल के अध्यक्ष तथा कला एवं संस्कृति मंत्री मुकेश्वर चुनी,

विश्व हिंदी सम्मेलन स्मारिका के लोकार्पण के दौरान श्रीमती प्रनीत कौर, मुकेश्वर चुनी, प्रवीण गोर्धन तथा सत्यव्रत चतुर्वेदी

भारत की विदेश राज्य मंत्री प्रनीत कौर एवं मुख्य अतिथि दक्षिण अफ़्रीका के वित्त मंत्री प्रवीन गोर्धन ने हिंदी से संबंधित अपने प्रभावशाली संदेश दिए । उद्घाटन समारोह का संचालन श्रीमती सुनीति शर्मा, उप सचिव (हिंदी), विदेश मंत्रालय, भारत सरकार ने की ।

9 शैक्षिक सत्र

शनिवार 22 सितंबर को ही शैक्षिक सत्रों का आरंभ शांति कक्ष में हुआ जिसमें सर्वप्रथम 'महात्मा गांधी की भाषा दृष्टि और वर्तमान का संदभ' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया गया । इस सत्र में प्रख्यात कथाकार और महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति विभूति नारायण राय ने कहा कि राजभाषा या संपर्क भाषा हिंदी ही हो सकती है तथा लिपियों के चक्कर में न पड़कर गांधी जी की हिंदुस्तानी अपनानी चाहिए । बीज वक्तव्य देते हुए आलोचक कृष्ण दत्त पालीवाल ने कहा कि गांधी का चिंतन परंपरासमत होते हुए भी क्रांतिकारी चिंतन है । वरिष्ठ पत्रकार मधुकर उपाध्याय ने महात्मा गांधी द्वारा गुजरात के भरुच में हिंदी भाषा को लेकर उठाए गए सवालों पर बात की । प्रख्यात आलोचक विजय बहादुर सिंह ने विस्तार से गांधी जी की भाषा दृष्टि पर प्रकाश डाला । चिंतक नंद किशोर आचार्य ने कहा कि अंग्रेज़ी आज भारत में एक तरह की हिंसा का प्रसार कर रही है और नागरिकता का राज्य से रिश्ता मज़बूत नहीं है । प्रो.रामभजन सीताराम ने

महात्मा गांधी की भाषा संबंधी धारणा के आलोक में अपने विचार व्यक्त किए । विदेश मंत्रालय की श्रीमती मधु गोस्वामी ने अपने पत्र वाचन में गांधी दर्शन पर अपनी बात रखी ।

उसके पश्चात अहिंसा कक्ष में 'दक्षिण अफ़्रीका में हिंदी शिक्षा-युवाओं का योगदान' विषय पर एक आलेख की प्रस्तुति हुई । नीति कक्ष में 'सूचना प्रौद्योगिकी : देवनागरी लिपि और हिंदी का सामर्थ्य' विषय पर आलेख पढ़ा गया जिसमें विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित सांसद रघुवंश प्रसाद सिंह ने आम आदमी को ध्यान में रखकर सहज तकनीकी उपकरण विकसित किए जाने की ज़रूरत पर बात की । डॉ.ओम विकास ने बीज वक्तव्य देते हुए कहा कि भाषा विषयक मानकीकरण में पाणिनी सारिणी को ध्यान में रखा जाना चाहिए । उन्होंने यूनीकोड, फ़ोनीकोड, नागरी लिपि आदि पर गहराई से बात की । एसोसिएट प्रोफ़ेसर जगदीप सिंह दांगी ने अपने द्वारा विकसित सूचना प्रौद्योगिकी से संबंधित विविध उपकरणों के बारे में जानकारी दी । उन्होंने सक्षक (वर्तनी परीक्षक), प्रखर देवनागरी फ़ांट परिवर्तक, यूनिदेव, शब्द ज्ञान आदि उपकरणों के संबंध में श्रोताओं को अवगत कराया । भाषाविद् परमानंद पांचाल ने कहा कि लोगों में लेखन की प्रवृति कम हो रही है । हिंदी को सूचना प्रौद्योगिकी (औद्योगिक क्रांति के बाद सबसे बड़ी क्रांति) के द्वारा मज़बूत करने की आवश्यकता है । केंद्रीय हिंदी संस्थान के उपाध्यक्ष अशोक चक्रधर ने सत्र की अध्यक्षता की । संचालन बालेंदु शर्मा दाधीच ने किया । और अंत में न्याय कक्ष में संपूर्ण आलेखों का प्रस्तुतिकरण हुआ ।

रविवार 23 सितंबर को शैक्षिक सत्रों से ही कार्यक्राम को जारी रखा गया । सबसे पहले 'हिंदी के विकास में विदेशी/प्रवासी लेखकों की भूमिका' विषय शांति कक्ष में पढ़ा गया । फिर अहिंसा कक्ष में 'लोकतंत्र और मीडिया की भाषा के रूप में हिंदी' विषय पर आलेख पढ़े गए । इसकी अध्यक्षता वरिष्ठ कथाकार हिमांशु जोशी ने की । बीज वक्तव्य लेखक दिनेश शर्मा द्वारा दिया गया । इस सत्र में कुल 17 शोध पत्र पढ़े गए । वक्ताओं के विमर्श का सार यही था कि मीडिया के लोकतंत्रीकरण में हिंदी की भूमिका बढ़ी है । तीसरा आलेख 'ज्ञान-विज्ञान और रोज़गार की भाषा के

रूप में हिंदी' विषय पर आधारित था जो नीति कक्ष में पढ़ा गया । न्याय कक्ष में इन सभी आलेखों को प्रस्तुत किया गया । भोजन के पश्चात शैक्षिक सत्रों का कारवां आगे बढ़ा । 'विदेश में भारत : भारतीय ग्रंथों की भूमिका' (शांति कक्ष), 'हिंदी : फ़िल्म, रंगमंच और मंच की भाषा' (अहिंसा कक्ष) एवं 'हिंदी के प्रसार में अनुवाद की भूमिका' (न्याय कक्ष) विषयों पर आलेख पढ़े गये । सोमवार 24 सितंबर को नेल्सन मंडेला सभागार में समापन सत्र संपन्न हुआ । इसमें विद्वानों को सम्मानित किया गया और पारित मंतव्यों की प्रस्तुति की गई ।

सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा कवि सम्मेलन

प्रथम दिन के शैक्षिक सत्रों का अंत एक सांस्कृतिक संध्या से हुआ । इसमें भारत और दुनिया के कई देशों के प्रतिष्ठित मंचों पर संत कबीर के जीवन पर आधारित अपने एकल नाट्य 'कबीर' की प्रस्तुति दे चुके लेखक, गायक, अभिनेता, संगीतकार व निर्देशक शेखर सेन ने अपने अभिनय द्वारा दर्शकों को एक बार फिर मंत्रमुग्ध कर दिया । इस एकल नाट्य प्रस्तुति में शेखर सेन ने 38 पात्रों को अभिनीत किया और कबीर की रचनाओं को 43 रागों में संगीतबद्ध किया । उन्होंने 45 तरह के काव्य दृश्यों को वयाख्यायित किया । कबीर के जीवन प्रसंगों को उनकी रमैनियों, साखियों और दोहों से जोड़ते हुए कबीर को मंच पर साकार कर दिया । एक कवि सम्मेलन का भी आयोजन किया गया जिसमें विश्व के कई हिंदी कवियों ने अपनी कविताएँ सुनाईं ।

प्रदर्शनियाँ तथा पुस्तक लोकार्पण

आयोजन के दौरान हिंदी साहित्य, सूचना प्रौद्योगिकी में हिंदी के प्रयोग और विविध औज़ार आदि पर आधारित प्रदर्शनियाँ लगाई गईं । इस मौके पर महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के समन्वयन में केंद्रीय हिंदी संस्थान तथा नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित हिंदी पुस्तकें प्रदर्शित किए गए । साथ ही साथ गांधी के

9वें विश्व हिंदी सम्मेलन में प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए श्रीमती प्रनीत कौर, विदेश राज्य मंत्री, भारत सरकार तथा श्री प्रवीन गोर्धन, वित्त मंत्री, दक्षिण अफ़्रीका

जीवन एवं साहित्य संबंधी प्रदर्शनी गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति द्वारा लगाई गई । गांधी और हिंदी से जुड़ी महत्वपूर्ण विरासत पर राष्ट्रीय अभिलेखागार (नई दिल्ली) ने प्रदर्शनी लगाई । सी-डैक तथा महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय ने हिंदी को प्रौद्योगिकी से जोड़ने वाले उपकरण तथा कार्यक्रम का प्रदर्शन किया । इस भव्य सम्मेलन में महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित सम्मेलन बुलेटिन 'हिंदी विश्व' का लोकार्पण सांसद सत्यव्रत चतुर्वेदी, रघुवंश प्रसाद, कुलपति विभूति नारायण राय के हाथों किया गया ।

विश्व हिंदी सम्मान

9वें विश्व हिंदी सम्मेलन में देश विदेश में हिंदी के विकास में सराहनीय योगदान देने वाले 16 देशों के 22 विदेशी और 19 भारतीय विद्वानों को सम्मानित किया गया । भारतीय विद्वानों में प्रो.एस.शेषरतनम, बालकवि बैरागी, मधुकर उपाध्याय, हिमांशु जोशी, डॉ.राजेंद्र प्रसाद मिश्र, कैलाशचंद्र पंत, एम.पियोंगतेमजन जामीर, प्रो.सीई जीनी, डॉ.रामगोपालन शर्मा दिनेश, प्रो.जाबिर हुसैन, प्रो.मधुसूदन त्रिपाठी, ज्ञान चतुर्वेदी, प्रो.बीवै ललितांबा, सुश्री ऊषा गांगुली, डॉ.के बनजा, डॉ.गिरिजाशंकर त्रिवेदी, हरिवंश, वाई लक्ष्मी प्रसाद और जियालाल शर्मा शामिल हैं ।

युक्रेन की सुश्री कटैरिना बालेरीवा दोवबन्या को विश्व हिंदी सम्मान

बुल्गारिया की वान्या जॉर्जिवा गनचेवा तथा इटली के मार्को जोली सम्मानित

सम्मानित होने वाले विदेशी विद्वानों के नाम इस प्रकार हैं – ऑस्ट्रेलिया के डॉ.पीटर जेरार्ड फ्रेडलांडर, रूस के प्रो.सर्गेई सेरेब्रियानीचेक, डॉ.डगमार मारकोवा, इटली के मार्को जोली, चीन के प्रो. लिऊ अन्वू, मॉरीशस की डॉ.सरिता बूधू, सत्यदेव टेंगर, थाईलेंड के बमरंग खाम, श्रीलंका के प्रो.उपुल रंजीत हेवातानागामेज, बुल्गारिया की वान्या जॉर्जिवा गनचेवा, अफ़गानिस्तान जे जबुल्लाह फीकरी, सूरीनाम के भोलानाथ नारायण, यूक्रेन की कैटरीना बालेरीवा दोवबन्या, ब्रिटेन के डॉ.कृष्ण कुमार, जर्मनी के प्रो.इंदु प्रकाश पाण्डेय, डॉ.बारबरा लॉटर्ज, मॉरीशस के सत्यदेव टेंगर, जापान के प्रो.तिकेदी इशीदा, ब्रिटेन के विजय राणा, अमेरिका के डॉ.वेदप्रकाश बटुक, जापान के डॉ.तोर्माचो किकुची और दक्षिण अफ़्रीका के रामभजन सीताराम ।

9वें विश्व हिंदी सम्मेलन के आयोजन में सहयोगी व हिंदी शिक्षा संघ के कर्मठ सदस्य,

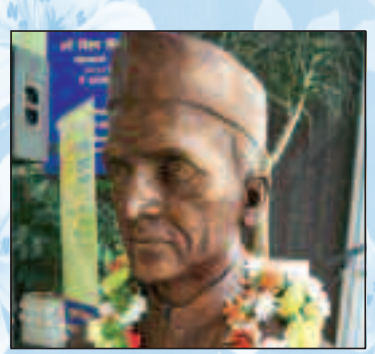

हिंदी शिक्षा संघ के संस्थापक पंडित वेदालंकार की प्रतिमा का अनावरण

9वें विश्व हिंदी सम्मेलन के संकल्प

1. मॉरीशस में स्थापित विश्व हिंदी सचिवालय विभिन्न देशों के हिंदी शिक्षण से संबद्ध विश्वविद्यालयों, पाठशालाओं एवं शैक्षिक संस्थानों से संबंधित एक डाटाबेस का बृहत स्रोत केंद्र स्थापित करे ।

2. विश्व हिंदी सचिवालय विश्व भर में हिंदी विद्वानों, लेखकों तथा हिंदी के प्रचार-प्रसार से संबद्ध लोगों का भी एक डाटाबेस तैयार करे ।

3. हिंदी भाषा की सूचना प्रौद्योगिकी के साथ अनुरूपता को देखते हुए सूचना प्रौद्योगिकी संसथानों द्वारा हिंदी संबंधी उपकरण विकसित करने का महत्वपूर्ण कार्य जारी रखा जाए ।

4. विदेशों में हिंदी शिक्षण के लिए एक मानक पाठ्यक्रम तैयार किए जाने के लिए महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा को अधिकृत किया जाए ।

5. अफ़्रीका में हिंदी शिक्षण को प्रोत्साहित करने के लिए और बदलते हुए वैश्विक परिवेश, युवा वर्ग की रुचि एवं आकांक्षाओं को देखते हुए उपयुक्त साहित्य एवं पुस्तकें तैयार की जाएँ ।

6. सूचना प्रौद्योगिकी में देवनागरी लिपि के प्रयोग पर पर्याप्त सॉफ्टवेयर तैयार किए जाएँ ताकि इसका लाभ विश्व भर के हिंदी भाषियों और प्रेमियों को मिल सके ।

7. अनुवाद की महत्ता देखते हुए अनुवाद के विभिन्न आयामों के संदर्भ में अनुसंधान की आवश्यकता है, अतः इस दिशा में ठोस कार्रवाई की जाए ।

8. विश्व हिंदी सम्मेलनों के बीच अंतराल में विभिन्न देशों में विशिष्ट विषयों पर क्षेत्रीय सम्मेलन किए जाते हैं । इनका उद्देश्य उनके अपने-अपने क्षेत्रों में हिंदी शिक्षण और हिंदी के प्रसार में आने वाली कठिनाइयों का समाधान खोजना है । सम्मेलन में इसकी सराहना करते हुए इस बात पर बल दिया कि इस कार्य को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ।

9. विश्व हिंदी सम्मेलन में भारतीय और विदेशी विद्वानों को सम्मानित करने की परंपरा रही है । इस विशिष्ट सम्मान के अनुरूप ही इन सम्मेलनों में विद्वानों को भेंट किए जाने वाले पुरस्कार अथवा सम्मान को गरिमापूर्ण नाम देते हुए इसे 'विश्व हिंदी सम्मान' कहा जाए ।

10. विगत वर्षों में आयोजित विश्व हिंदी सम्मेलनों में पारित प्रस्ताव को रेखांकित करते हुए हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ में आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता प्रदान किए जाने के लिए समयबद्ध कार्रवाई सुनिश्चित की जाए ।

11. दो विश्व हिंदी सम्मेलनों के आयोजन के बीच यथासंभव अधिकतम तीन वर्ष का अंतराल रहे ।

12. 10वां विश्व हिंदी सम्मेलन भारत में आयोजित किया जाए ।

मॉरीशस में हिंदी दिवस

हिंदी संगठन

गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम कैलाश प्रयाग

हिंदी संगठन ने इस वर्ष देश के उत्तर में स्थित गाँव त्रियोले में हिंदी दिवस का आयोजन भव्य रूप से किया । गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम कैलाश प्रयाग, कला एवं संस्कृति मंत्री श्री मुकेश्वर चुनी, भारतीय उप उच्चायुक्त श्री प्रशांत पीसे, विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव श्रीमती पूनम जुनेजा, हिंदी संगठन की संरक्षिका लेडी पद्मा घरभरन जी के साथ ही साथ देश की अनेक संस्थाओं के प्रतिनिधि गण, बच्चों एवं बड़ों ने भारी संख्या में भाग लेकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई ।

छात्रों ने कविता-पाठ कर कार्यक्रम में सक्रिय भाग लिया । लेडी पद्मा घरभरन ने अपने संदेश में पुस्तकों एवं शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डाला । मंत्री मुकेश्वर चुनी ने अपने संदेश में भी शिक्षा पर अधिक बल देने की बात की । भारतीय उप उच्चायुक्त प्रशांत पीसे ने इस अवसर पर संगठन को पुस्तक भेंट की और कहा कि भविष्य में भी भारतीय उच्चायोग अपना पूरा सहयोग प्रदान करेगा । गणराज्य के राष्ट्रपति कैलाश प्रयाग जी ने इतिहास की ओर नज़र दौड़ाते हुए वृक्षों की छाँव तथा बैठकाओं से आज देश की प्रत्येक पाठशालाओं में प्रौद्योगिकी एवं शिक्षण की बात करते हुए हिंदी भाषा के शिक्षण एवं महत्व से जुड़े रहने की बात की ।

हिंदी संगठन प्रत्येक वर्ष दो हिंदी सेवियों को सम्मानित करता है । इस वर्ष अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त कथाकार श्री रामदेव धुरंधर जी को 'साहित्य सृजन सम्मान' से सम्मानित किया गया तथा 'हिंदी सेवा सम्मान' पाने वाले हैं हिंदी संगठन के कोषाध्यक्ष श्री हनुमान दुबे गिरधारी जी जो लंबे समय से देश की सामाजिक, धार्मिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक संस्थाओं से जुड़े रहने के साथ-साथ संस्कृत की परीक्षाओं का भी कार्यभार संभाले हुए हैं ।

इस वर्ष हिंदी संगठन द्वारा त्रियोले में हिंदी दिवस मनाने के पिछे सबसे बड़ा कारण यूनियन के पुस्तकालय को 'सर रवींद्र घरभरन हिंदी पुस्तकालय' नाम प्रदान करना भी रहा । यह नामकरण राष्ट्रपति कैलाश प्रयाग द्वारा नामपट अनावरण से हुआ । हिंदी संगठन की ओर से इस संस्था के जनक को इस नामकरण हेतु श्रद्धांजलि रही । इसके उपरांत सर रवींद्र घरभरन की देश-सेवा एवं जीवन की उपलब्धियों पर एक सुंदर पावर पोंइट प्रस्तुति की गई ।

श्रीमती अंजू घरभरन

महासचिव , हिंदी संगठन

भारतीय उच्चायोग मॉरीशस

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी भारतीय उच्चायोग मॉरीशस द्वारा हिंदी दिवस का आयोजन किया गया जिसमें बच्चे-बड़े सभी ने भाग लेकर हिंदी भाषा के प्रति अपना प्रेम दर्शाया । भारतीय उच्चायोग ने इस वर्ष हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में हिंदी निबंध एवं हिंदी काव्य-पाठ प्रतियोगिताएँ आयोजित की जिनमें भाग लेने वालों की संख्या संतोषजनक रही ।

5 अक्टूबर को भारतीय उच्चायोग, इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र तथा विश्व हिंदी सचिवालय के संयुक्त तत्वावधान में इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के सभागार में हिंदी निबंध एवं हिंदी काव्य-पाठ प्रतियोगिताओं का पुरस्कार वितरण समारोह संपन्न हुआ । इस अवसर पर मॉरीशस में भारत उच्चायुक्त श्री टी.पी.सीताराम, उप उच्चायुक्त श्री प्रशांत पीसे, श्री सत्यदेव टेंगर, श्रीमती सरिता बुधू, अमिता शॉ, श्रीमती पूनम जुनेजा तथा श्री गंगाधरसिंह सुखलाल सहित अन्य महानुभाव उपस्थित थे ।

इसमें प्रो.दर्शन पुरोहोत द्वारा नाट्य-प्रस्तुति (बड़े भाई साहब) की गई तथा महानुभावों द्वारा इस अवसर पर संदेश भी पढ़े गए ।

काव्य-पाठ तथा निबंध प्रतियोगिताओं की तीन श्रेणियाँ रखी गई थीं - प्राथमिक, माध्यमिक तथा स्नातकीय स्तर । निबंधों के शीर्षक इस प्रकार थे- 'मेरे मन में भारत की छवी', 'मेरे आदर्शों का देश भारत', 'मेरी प्रिय पुस्तक', 'मैं यदि कवि होता' और 'क्यों मुझे अच्छे लगते हैं हिंदी गाने' (प्राथमिक व माध्यमिक स्तर); 'भारत-मॉरीशस की दोस्ती', 'मॉरीशस में हिंदी', 'महात्मा गांधी की प्रासंगिकता', 'कैसे बन सकती है हिंदी संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा' और 'मेरी दृष्टि में हिंदी सिनेमा' (स्नातकीय स्तर) ।

आर्य सभा मॉरीशस

मॉरीशस में हिंदी के प्रचार-प्रसार में अहम भूमिका निभाने वाली संस्था आर्य सभा मॉरीशस ने 15 सितंबर को हिंदी दिवस के अवसर पर पुस्तक लोकार्पण कार्यक्रम का आयोजन किया । इसी अवसर पर संस्था द्वारा संचालित दयानंद ऐंग्लो-वैदिक डिग्री कॉलिज के छात्रों को परीक्षा फल प्रदान किए गए ।

शिक्षा और मानव संसाधन मंत्री वसंत कुमार बनवारी ने अपने भाषण में शिक्षा के महत्व और उसे हासिल करने के अधिकार पर चर्चा की । साथ ही साथ मॉरीशस में हिंदी शिक्षा के क्षेत्र में आर्य सभा तथा अन्य संस्थाओं के योगदान पर उन्होंने बात की ।

कार्यक्रम का आरंभ श्री हिमेश तथा डी.ए.वी डिग्री कॉलिज के छात्रों द्वारा भजन गाण से हुआ । उसके पश्चात डी.ए.वी डिग्री कॉलिज कमिटी के कार्यवाहक प्रधान डॉ.आर.निवूर द्वारा स्वागत भाषण हुआ । कॉलिज के कुलपति डॉ.उदय नारायण गंगू जी ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए मॉरीशस में हिंदी के प्रचार-प्रसार में आर्य सभा के योगदान पर बात की ।

इसके बाद छात्रों द्वारा दो पुस्तकों (सत्यार्थ प्रकाश और पुष्पांजलि) की समीक्षा प्रस्तुत की गई और फिर आर्य सभा के प्रधान श्री रामधनी ने अपना संदेश सुनाया । कार्यक्रम की अगली कड़ी में पुस्तकों का लोकार्पण हुआ । समारोह में उपस्थित विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव श्रीमती पूनम जुनेजा ने अपने संदेश में ज्ञान के महत्व तथा हिंदी दिवस पर अपने विचार व्यक्त किए । सामाजिक एकीकरण तथा आर्थिक सशक्तिकरण मंत्री सुरेंद्र दयाल ने अपने संदेश में शिक्षा एवं उसके मूल्यों के महत्व पर ज़ोर डाला ।

अंत में छात्रों को उनके अंक-पत्र प्रदान किए गए और कार्यक्रम के अंत में डॉ.बीरसेन जगासिंह ने धन्यवाद ज्ञापन किया । कार्यक्रम का संचालन डॉ.जयचंद लालबिहारी जी ने किया ।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

महात्मा गांधी संस्थान में हिंदी सप्ताह 2012

छात्रों द्वारा काव्य-पाठ

हिंदी दिवस के अवसर पर मॉरीशस के विभिन्न संस्थाओं द्वारा कार्यक्रम आयोजित होते रहे हैं । महात्मा गांधी संस्थान के हिंदी विभाग भी इसी प्रथा के अनुरूप कई वर्षों से सितंबर महीने में हिंदी सप्ताह का आयोजन करता आ रहा है । 10 से 14 सितंबर तक हिंदी विभाग द्वारा हिंदी पढ़ने वाले स्नातकों के लिए स्वरचित कविता, अंत्याक्षरी, वाक प्रतियोगिता तथा नुक्कड़ नाटक प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं ।

सर्वप्रथम 10 सितंबर को सुब्रमण्य भारती सभागार में स्वरचित कविता प्रतियोगिता का आयोजन हुआ । हिंदी विभाग की वरिष्ठ व्याख्याता डॉ.अलका धनपत ने इस अवसर पर सभी का स्वागत किया । विभाग की अध्यक्ष डॉ.राजरानी गोबिन ने भी सभी का स्वागत करते हुए छात्रों को इस प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए धन्यवाद दिया और शुभकामनाएँ भी दीं । निर्णायक मंडल में डॉ.हेमराज सुंदर, कवि व महात्मा गांधी संस्थान के सृजनात्मक लेखन के अध्यक्ष, तथा संस्कृत विभाग में व्याख्याता, श्री केवल जी थे । 'हिंदी प्रेमी हैं MGI के छात्र, कविता बन के उमड़ेगा आपके हृदय का स्पन्दन' – इन शब्दों से स्वरचित कविता प्रतियोगिता का प्रारंभ हुआ ।

सर्वप्रथम बी.ए. द्वितीय वर्ष की प्रीया अजोदा ने अपनी कविता *'अनोखा रिश्ता'* पढ़ी । छात्रों ने अपनी कविताओं से वातावरण को विभिन्न रसों, रागों, विचारों, सवालों और जवाबों में डुबो दिया । बी.ए. के छात्रों ने *'तो फिर क्यों ?'*, *'कैसा है मनुष्य का जीवन'*, *'इंटरनेट'*, *'माँ'*, *'जीवन पथ'*, *'नारी अस्मिता'* (कैलाश), *'अपना चाचा रामगुलाम'*, *'मशीनी ज़िंदगी'*, *'मेरा प्रिय दोस्त'* (अनिश्ता मुतन), *'तनाव'*, *'बेटे की अर्थी'* (वंदना) *और 'अपने पति की हत्यारिन'* (खुशबू बिसराम) *जैसी कविताएँ पढ़ी गईं ।* एम.ए. के छात्रों ने *'कोशिश करने वालों की हार नहीं होती'*, *'बेटी ब्याही गई'* (विदूषी), *'सच की पहचान'* (हेमंत कोवल) कविताएँ सुनाईं ।

कविताएँ सुन लेने के पश्चात डॉ.अलका धनपथ ने कविताओं में विषय की सार्थकता, चयन, गहनशीलता, तथा भाव पर बात की और सभी प्रतिभागियों को बधाई दी । डॉ.हेमराज सुंदर ने इस सुंदर आयोजन के लिए हिंदी विभाग को बधाई दी और छात्रों में प्रतिभा, सृजनशीलता, बनाए रखने पर ज़ोर दिया । अंततः बी.ए की वंदना (बेटे की अर्थी) को तृतीय पुरस्कार, अनिश्ता मुतेन (मेरा प्रिय दोस्त) को द्वितीय पुरस्कार तथा प्रथम पुरस्कार खुश्बू बिसराम (मैं हूँ अपने पति की हत्यारिन) को प्राप्त हुआ ।

11 सितंबर को वाक प्रतियोगिता का आयोजन सुब्रमण्य भारती सभागार में ही हुआ जिसका विषय था 'शिक्षा के क्षेत्र में सर शिवसागर रामगुलाम का योगदान' जिसमें कुल मिलाकर 10 प्रतिभागियों ने भाग लिया । हिंदी विभाग की व्याख्याता सुश्री अंजलि चिंतामणि ने सभी का स्वागत किया और प्रतिभागियों को शुभकामनाएँ दीं । निर्णायक मंडल में डॉ.राजरानी गोबिन तथा डॉ.हेमराज सुंदर शामिल थे । समय अनुशासिका थी डॉ.अलका धनपथ । बी.ए. में प्रथम पुरस्कार साधना सिबरण को गया और निष्ठा पुनिया को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया । एम.ए. में जानकी रुमीला प्रथम स्थान पर आई और द्वितीय स्थान पर श्रीमती तीना मोहेश जगु आई । सांत्वाना पुरस्कार द्वितीय वर्ष के श्री कैलाश को गया ।

नुक्कड़ नाटक का आयोजन 12 सितंबर को हिंदी विभाग के प्रांगण में किया गया । इसका संचालन श्रीमती माधुरी रामधारी तथा डॉ.कृष्ण कुमार झा ने किया । प्रतियोगिता में 4 टौलियों ने अपने नातक प्रस्तुत किए - 'नाच मोबाइल का', 'आज के युवक', 'और फूको' तथा 'दे दनादन' । इस प्रतियोगिता में बी.ए. तृतीय वर्ष (नाच मोबाइल का) के छात्रों को प्रथम पुरस्कार तथा प्रथम वर्ष (दे दनादन) के छात्र को सांत्वाना पुरस्कार प्रदान किए गए ।

13 सितंबर को महात्मा गांधी संस्थान के प्रांगण में अंत्याक्षरी का आयोजन हुआ

नुक्कड़ नाटक

जिसमें कुल मिलाकर 21 टोलियों ने भाग लिया । इसका संचालन हिंदी विभाग में वरिष्ठ व्याख्याता श्री विनय गुदारी ने किया तथा निर्णायक मंदल में श्रीमती कीर्ति, श्री अरविंद बिसेसर (भोजपुरी विभाग) तथा श्री जयगणेश (भोजपुरी विभाग) शामिल थे ।

प्रतियोगिता में भाग लेने वालों ने अंतिम अक्षर के आधार पर गाना, शब्द के आधार पर गाना और प्रश्नों के उत्तर देकर गाना शामिल थे । छात्रों तथा शिक्षकों ने मिलकर गाने गाए और हिंदी के इस सुंदर आयोजन में भाग लिया । बी.ए. तृतीय वर्ष की टोली 'हम से नहीं' ने यह प्रतियोगिता जीती ।

14 सितंबत को इन प्रतियोगिताओं का पुरस्कार वितरण समारोह सुब्रमण्य भारती सभागार में आयोजित हूआ । समारोह में श्री विनय गुदारी जी ने छात्रों, शिक्षकों तथा गण्यमान्य अतिथियों का स्वागत किया । इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र की निदेशक सुश्री अमिता शॉ कार्यक्रम की मुख्य अतिथि थी । महात्मा गांधी संस्थाण के निदेशक श्री बिजय मधू, श्री रवींद्र द्वारका, डॉ.कुंजल, सनातन धर्म टेंपल्स फ़ेदेरेश के श्री सोमदत्त दलतमन, डॉ.रेश्मी रामधोनी, डॉ.राजरानी गोबिन सहित अन्य अतिथि गण उपस्थित थे । इस अवसर पर काव्य-प्रतियोगिता के विजेताओं ने अपनी-अपनी कविताएँ सुनाईं तथा सुश्री अमीता शॉ द्वारा उन्हें पुरस्कृत किया गया । नुक्कड़ नाटक के विजेताओं को श्री रवींद्र द्वारका ने पुरस्कृत किया । डॉ कुंजल द्वारा अंत्याक्षरी विजेताओं को पुरस्कृत किया गया । महात्मा गांधी संस्थान के निदेशक बिजय मधु ने इस आयोजन के लिए हिंदी विभाग को बधाई दी और यह आशा व्यक्त की । डॉ.राजरानी गोबिन ने अंत में धन्यवाद ज्ञापन किया ।

प्रिया अजोधा की रिपोर्ट

हिंदी दिवस पर वाराणसी में विविध कार्यक्रम

हिंदी दिवस के अवसर पर वाराणसी के सरकारी एवं गैर सरकारी प्रतिष्ठानों में विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया । हिंदी आंदोलन में मुख्य भूमिका निभाने वाली काशी नागरी प्रचारणी सभा में आयोजित कार्यक्रम में विद्वानों ने दावा किया कि किसी भी दृष्टि से हिंदी कमज़ोर नहीं है । न्यायमूर्ति श्री गणेशदत्त दूबे की अध्यक्षता में हुई गोष्ठी में विचार व्यक्त करते हुए प्रख्यात रंगसेवी डॉ.उपाध्याय ने भारतेंदु हरिश्चंद्र, निराला से लेकर महामना मालवीय और आधुनिक काल में डॉ.चंद्रबली सिंह तक की हिंदी सेवा का विशिष्ट उल्लेख किया । इस गोष्ठी में श्रीमती भगवंती सिंह न्यायमूर्ति, श्री गणेशदत्त दूबे, डॉ.पवन कुमार शास्त्री, श्री सुखमंगल सिंह, श्री नरेंद्र नाथ मिश्र, श्री विष्णु सिंह, श्री ब्रजेश चंद्र पांडेय, डॉ.जितेंद्र नाथ मिश्र सहित अन्य महानुभाव उपस्थित थे ।

काशी हिंदू विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के साथ ही केंद्रीय कार्यालय में भी रजिस्ट्रार प्रो.वी.के.कुमरा की अध्यक्षता एवं हिंदी विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो.चौथीराम यादव के मुख्य आतिथ्य में हिंदी दिवस मनाया गया जहाँ हिंदी में काम करने, हिंदी को बढ़ावा देने और सम्मान दिलाने के लिए अफ़सरों एवं कर्मचारियों ने संकल्प लिया । 14-21 सितंबर तक हिंदी सप्ताह भी मनाया गया ।

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ में हिंदी दिवस पर '21वीं सदी : चुनौतियाँ और संभावनाएँ' विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया । मुख्य अतिथि आगरा विश्वविद्यालय के प्रो.गिरिजा शंकर शर्मा ने कहा कि भूमंडलीकरण के युग में बाज़ार और सत्ता का काम हिंदी के बगैर नहीं चलने वाला है । कुलपति प्रो.पी नाग ने कहा कि हिंदी को राष्ट्रीय चेतना के संवाहक के रूप में देखना चाहिए । इस अवसर पर प्रो.अवधेश प्रधान, प्रो.श्रद्धानंद इत्यादि लोगों के भी व्याख्यान हुए ।

वाराणसी से डॉ.राकेश कुमार दूबे की रिपोर्ट

विश्व भर में हिंदी दिवस

सूरीनाम

गुरुवार 14 सितंबर को पारामारिबो के भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के हिंदी विभाग ने हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में अनेक गतिविधियों का आयोजन किया । सर्वप्रथम 'भारतीय तथा अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन किया गया जिसमें प्रतिभागियों ने अपने विचार किए । उसके बाद काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें श्रीमती संध्या भग्गो, पं.अवतार ब्रिजानंद, श्रीमती शर्मीला रामरतन, श्री मनोरथ आदि अतिथियों ने अपनी कविताएँ सुनाईं । भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के डॉ.एस.के.झा ने हिंदी दिवस पर एक पत्र पढ़ा । इस अवसर पर छात्रों ने रामचरितमानस की कुछ चौपाइयाँ प्रस्तुत कीं । इस आयोजन का मक्सद था हिंदी भाषा तथा हिंदी साहित्य के प्रति लोगों की रुचि बढ़ाना ।

ओहियो

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी संघ (International Hindi Association) द्वारा किंग्सबड़ी सेंटर, उत्तर पूर्वी ओहियो में 16 सितंबर को हिंदी दिवस का आयोजन किया गया । संघ के प्रधान श्री अनूप कपूर ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया । कार्यक्रम में हिंदी प्रदर्शनी लगाई गई जिसमें अंतर्राष्ट्रीय हिंदी संघ द्वारा हिंदी के प्रचार-प्रसार से संबंधित सूचनाएँ थीं । अनूप कपूर ने कार्यक्रम में उन सभी आयोजनों पर प्रकाश डाला जो संस्था आयोजित करती आ रही है ।

बेइजिंग

बेइजिंग स्थित भारतीय दूतावास में हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम आयोजित किया गया । इस दौरान वक्ताओं ने हिंदी के महत्व पर ज़ोर देते हुए कहा कि हिंदी को आगे ले जाना होगा । कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जदयू के अध्यक्ष शरद यादव ने कहा कि कौन कहता है हम हिंदी बोलते हुए विकास नहीं कर सकते ? चीन का उदाहरण देते हुए शरद ने कहा कि वे पिछले कुछ दिनों में जहाँ भी गए, सभी जगहों पर नेता चीनी (मैंडरिन) भाषा में ही संवाद कर रहे थे । इससे ज़ाहिर होता है कि चीनी लोगों को अपनी भाषा पर गर्व है, और इसके चलते चीन तेज़ी से विकास भी कर रहा है । कार्यक्रम में बेइजिंग विश्वविद्यालय में हिंदी के प्रोफ़ेसर अनिल राय तथा दक्षिण एशिया विभाग के निदेशक प्रो.च्यांग चिंग ख्वेई ने हिंदी के प्रयोग और विकास पर अपने विचार प्रकट किए । हिंदी दिवस के इस कार्यक्रम में चीन में हिंदी का अध्ययन कर रहे छात्रों और भारतीय वक्ताओं ने भी भाषण दिए व कविता पाठ किया । इस मौके पर कई हिंदी-प्रेमी उपस्थित हुए ।

कुवैत

कुवैत के भारतीय दूतावास में 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया गया जिसमें दूतावास के अधिकारियों व हिंदी प्रेमियों ने भाग लिया । कार्यक्रम का उद्घाटन दूतावास के श्री विधु नायर ने किया जिन्होंने हिंदी की प्रासंगिकता और उसके प्रचार-प्रसार पर बात की । इस वर्ष दूतावास द्वारा वाक तथा गायन प्रतियोगिताएँ आयोजित किए गए । वाक प्रतियोगिता के शीर्षक थे - प्रवासी भारतीय और हिंदी, ओलंपिक्स में भारतीय खिलाड़ियों की बढ़ती भागीदारी, भारत के स्वाधीनता संग्राम में तत्कालीन प्रमुख नेताओं का योगदान और भारत की राष्ट्रीय नदी गंगा को प्रदूषणरहित एवं पर्यावरण के अनुकूल किस प्रकार बनाया जाए । गीत प्रतियोगिता में प्रतिभागियों ने प्रकृति और देशप्रेम विषयों पर गीत गाए । प्रतिभागियों ने प्रभावशाली और सृजनात्मक ढंग से हिंदी में अपने आप को व्यक्त किया । श्री विधू नायर ने विजेताओं को पुरस्कृत किया । कार्यक्रम का संचालन श्री मनोज कुमार मंडल ने किया ।

रूस : सेंट पीटर्सबर्ग

18 सितंबर को सेंट पीटर्सबर्ग के कोन्सुलेट हॉल में हिंदी दिवस मनाया गया । इसमें हिंदी पाठशाला 653 और सेंट पीतर्सबर्ग विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग ने भाग लिया । इस मौके पर हरियाणा विधान सभा के स्पीकर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे । रूस के बच्चों और विश्वविद्यालय के छात्रों ने हिंदी गीत, कविताएँ एवं नृत्य प्रस्तुत करके उपस्थित सभी दर्शकों का मन मोह लिया ।

श्रीलंका

श्रीलंका स्थित कैंडी के सहायक भारतीय उच्चायोग ने शुक्रवार 14 सितंबर को हिंदी दिवस का आयोजन किया । कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि शिक्षा, उद्योग, खेल-कूद, नारी, ग्रामीण विकास, भारतीय संस्कृति व युवा मंत्री श्रीमती अनुशिया शिवराजा द्वारा किया गया । सहायक भारतीय उच्चायोग द्वारा संचालित भारतीय कला केंद्र के छात्रों ने रंग भरे शास्त्रीय व फ़िल्मी नृत्य, नाट्य आदि प्रस्तुत करके दर्शकों को भाव विभोर कर दिया । उसके पश्चात अपने वक्तव्य में कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ने बताया कि विश्व भर में हिंदी दूसरी सब से अधिक बोली जाने वाली भाषा है इसीलिए श्रीलंका के निवासियों को भी यह भाषा सीखनी चाहिए । सिंहली तथा तमिल के अतिरिक्त श्रीलंका में हिंदी भी अत्यंत प्रचलित है । सरकारी तथा प्राइवेट पाठशालाओं में हिंदी की पढ़ाई होती है । साथ ही साथ बॉलिवुड की फ़िल्में भी श्रीलंका में प्रचलित हैं ।

2003 में स्थापित कैंडी स्थित भारतीय कला केंद्र अब तक श्रीलंका में हिंदी शिक्षण कार्य करता आ रहा है । वर्तमान में 120 छात्र गण हिंदी का अध्ययन कर रहे हैं । दक्षिण भारतीय हिंदी प्रचार सभा के सहयोग से हिंदी की वार्षिक परीक्षाएँ चलाने के अलावा यह संस्था श्रीलंका के छात्रों को आगरा के केंद्रीय हिंदी संस्थान से छात्रवृत्ति भी प्रदान करती है ।

ऐतिहासिक रहा ब्लॉगरों का अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

(दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन करते वरिष्ठ साहित्यकार उद्भ्रांत, साथ में शिखा वार्ष्णेय, गिरीश पंकज, रणधीर सिंह सुमन और रवींद्र प्रभात)

आज से 75 वर्ष पूर्व सन् 1936 में लखनऊ शहर प्रगतिशील लेखक संघ के प्रथम अधिवेशन का गवाह बना था, जिसकी गूंज आज तक सुनाई पड़ रही है । उसी प्रकार आज जो लखनऊ में ब्लॉग लेखकों का अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित हो रहा है, इसकी गूँज भी आने वाले 75 वर्षों तक सुनाई पड़ेगी ।

उपरोक्त विचार बली प्रेक्षागृह,कैसरवाग,लखनऊ में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय हिंदी ब्लॉगर सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए प्रतिष्ठित कवि उद्भ्रांत ने व्यक्त किए । सकारात्मक लेखन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से यह सम्मेलन तस्लीम एवं परिकल्पना समूह द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया । इस सम्मेलन में पूर्णिमा वर्मन (शारजाह), रवि रतलामी (भोपाल), शिखा वार्ष्णेय (लंदन), डॉ.अरविंद मिश्र (वाराणसी), अविनाश वाचस्पति (दिल्ली), मनीष मिश्र (पुणे),इस्मत जैदी (गोआ),आदि ब्लॉगरों ने अपने उद्गार व्यक्त किए । कार्यक्रम को मुद्राराक्षस, शैलेंद्र सागर, वीरेंद्र यादव, राकेश, शकील सिद्दीकी, शहंशाह आलम, डॉ.सुभाष राय, डॉ.सुधाकर अदीब, विनय दास आदि वरिष्ठ साहित्यकारों ने भी संबोधित किया ।

वक्ताओं ने कहा कि इंटरनेट एक ऐसी तकनीक है, जो व्यक्ति को अभिव्यक्ति का ज़बरदस्त साधन उपलब्ध कराती है, लोगों में सकारात्मक भावना का विकास करती है, दुनिया के कोने-कोने में बैठे लोगों को एक दूसरे से जोड़ने का अवसर उपलब्ध कराती है । सामाजिक समस्याओं और कुरितियों के विरुद्ध जागरूक करने का ज़रिया भी बनती है । इसकी पहुँच और प्रभाव इतना ज़बरदस्त है कि यह दूरियों को पाट देता है, संवाद को सरल बना देता है और संचार के उत्कृष्ट साधन के रूप में उभरकर सामने आता है । लेकिन इसके साथ ही साथ जब यह अभिव्यक्ति के विस्फोट के रूप में सामने आती है, तो उसके कुछ नकारात्मक परिणाम भी देखने को मिलते हैं । ये परिणाम हमें दंगों और पलायन के रूप में झेलने पड़ते हैं । यही कारण है कि जब तक यह सकारात्मक रूप में उपयोग में लाया जाता है, तो समाज के लिए अलादीन के चिराग की तरह काम करता है, लेकिन जब यही अवसर नकारात्मक स्वरूप अख्तियार कर लेता है, तो समाज में विद्वेष और घृणा की भावना पनपने लगती है और नतजीतन सरकारें वंदिषें का हंटर सामने लेकर सामने आ जाती हैं । लेकिन यदि रचनाकार अथवा लेखक सामाजिक सरोकारों को ध्यान में रखते हुए इस इंतरनेट का उपयोग करें, तो कोई कारण नहीं कि उसके सामने किसी तरह का खतरा मंडराए । इससे समाज में प्रेम और सौहार्द्र का विकास भी होगा और देश तरक्की की सीढ़ियाँ भी चढ़ सकेगा ।

(वटवृक्ष का लोकार्पण : बाएँ से सुश्री शिखा वार्ष्णेय, डॉ.अरविंद मिश्रा, डॉ.सुभाष राय, श्री शैलेंद्र सागर, श्री उद्भ्रांत, श्री गिरीश पंकज, ज़ाकिर अली रजनीश व रणधीर सिंह सुमन)

परिकल्पना ब्लॉग दशक सम्मान

दशक के ब्लॉगर : पूर्णिमा वर्मन, समीर लाल समीर, रवि रतलामी, रश्मि प्रभा, अविनाश वाचस्पति

दशक के ब्लॉग : उड़न तश्तरी : ब्लॉगर समीर लाल समीर, ब्लॉग्स इन मीडिया : ब्लॉगर बी एस पावला, नारी : ब्लॉगर रचना, साई ब्लॉग : ब्लॉगर डॉ.अरविंद मिश्र, साइंस ब्लॉगर असोसिएशन : ब्लॉगर डॉ.अरविंद मिश्र व डॉ.जाकिर अली रजनीश

दशक के ब्लॉगर दंपति : कृष्ण कुमार यादव और आकांक्षा यादव

इस अवसर पर देश के कोने-कोने से आए 200 से अधिक ब्लॉगर, लेखक, संस्कृतिकर्मी और विज्ञान संचारक भी उपस्थित रहे । कार्यक्रम में तीन चर्चा सत्रों (न्यू मीडिया की भाषाई चुनौतियाँ,न्यू मीडिया के सामाजिक सरोकार, हिंदी ब्लॉगिंग : दशा, दिशा एवं दृष्टि) में रचनाकारों ने अपने विचार रखे । इस अवसर पर कार्यक्रम के संयोजक रवींद्र प्रभात ने ब्लॉगरों की सर्वसम्मति से सरकार से ब्लॉगर अकादमी के गठन की मांग की, जिससे ब्लॉगरों को संरक्षण प्राथो सके और वे समाज के विकास में सकारात्मक योगदान दे सकें ।

इस अवसर पर वटवृक्ष पत्रिका के ब्लॉगर दषक विशेषांक का लोकार्पण किया गया, जिसमें हिंदी के सभी महत्वपूर्ण ब्लॉगरों के योगदान को रेखांकित किया गया है । इसके साथ ही साथ कार्यक्रम के सह संयोजक डॉ.जाकिर अली रजनीष की पुस्तक भारत के महान वैज्ञानिक एवं अल्का सैनी के कहानी संग्रह लाक्षागृह तथा मनीष मिश्र द्वारा संपादित पुस्तक हिंदी ब्लॉगिंग : स्वरूप व्याप्ति और संभावनाएँ का भी लोकार्पण इस अवसर पर किया गया ।

कार्यक्रम के दौरान ब्लॉग जगत में उल्लेखनीय योगदान के लिए पूर्णिमा वर्मन, रवि रतलामी, बी एस पावला,रचना, डॉ.अरविंद मिश्र, समीर लाल समीर, कृष्ण कुमार यादव और आकांक्षा यादव को परिकल्पना ब्लॉग दशक सम्मान से विभूषित किया गया ।

इसके साथ ही साथ अविनाश वाचस्पति को प्रब्लेस चिट्ठाकारिता शिखर सम्मान, रश्मि प्रभा को शमशेर जन्मशती काव्य सम्मान, डॉ.सुभाष राय को अज्ञेय जन्मशती पत्रकारिता सम्मान, अरविंद को केदारनाथ अग्रवाल जन्मशती साहित्य सम्मान,शहंशाह आलम को गोपाल सिंह नेपाली जन्मशती काव्य सम्मान, शिखा वार्ष्णेय को जानकी वल्लभ शास्त्री स्मृति साहित्य सम्मान, गिरीश पंकज को श्रीलाल शुक्ल व्यंग्य सम्मान, डॉ.जाकिर अली रजनीश को फैज अहमद फैज जन्मशती सम्मान तथा 51 अन्य ब्लॉगरों को तस्लीम परिकल्पना सम्मान प्रदान किए गए ।

परिकल्पना.कॉम से साभार

हिंदी आई.टी

आँख मूंदकर साथ नहीं देता न्यू मीडिया : बालेंदु

न्यू मीडिया में सच के साथ खड़े होने और अन्याय के खिलाफ़ आवाज़ उठाने की प्रवृत्ति स्वाभाविक रूप से विद्यमान है । लेकिन वह आँख मूंदकर किसी भी आंदोलन को शक्ति देने वाला नहीं है और उसमें स्वयं को दुरुपयोग से बचाने की क्षमता भी मौजूद है । इसलिए किसी को यह खुशफ़हमी नहीं पालनी चाहिए कि भले ही उद्देश्य सही हो या गलत, थोड़ी सी तकनीकी चतुराई और प्रचार के बल पर न्यू मीडिया की अथाह ताकत का प्रयोग व्यवस्था को मजबूर करने के लिए किया जा सकता है । चर्चित तकनीक विशेषज्ञ और प्रभासाक्षी.कॉम के संपादक बालेंदु शर्मा दाधीच ने नई दिल्ली के कांस्टीट्यूशन क्लब में 'साइबर मीडिया का प्रभाव' विषय पर एक गोष्ठी को संबोधित करते हुए यह बात कही । वे 'राजीव गांधी एक्सीलेंस अवार्ड' के मौके पर केंद्रित कोयला मंत्री श्रीप्रकाश जायसवाल की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम के दौरान बोल रहे थे ।

कार्यक्रम के दौरान केंद्रीय कोयला मंत्री श्रीप्रकाश जायसवाल ने प्रभासाक्षी.कॉम से जुड़े सुप्रसिद्ध कार्टुनिस्ट हरिश्चंद्र शुक्ला 'काक' सहित कुछ पत्रकारों और सामाजिक कार्यकर्ताओं को समाज के प्रति उनके योगदान के लिए सम्मानित किया । गोष्ठी में बोलनेवाले अन्य वक्ताओं में काक, अमलेंदु उपाध्याय, पंकज चतुर्वेदी, विनोद बब्बर आदि शामिल थे । इसका आयोजन कानपुर से प्रकाशित पत्रिका सीमापुरी टाइम्स की ओर से किया गया था । श्री जायसवाल ने नए मीडिया के उभार की चर्चा करते हुए कहा कि आधुनिक काल में उसकी भूमिका लगातार मज़बूत और अहम होती चली गई है । नई पीढ़ी और तकनीक से जुड़े इस माध्यम के बारे में ज़्यादा से ज़्यादा जागरूकता पैदा करने की आवश्यकता है ।

मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए बालेंदु शर्मा दाधीच ने कहा कि जनांदोलनों को न्यू मीडिया की तरफ़ से मिलने वाला अथाह समर्थन वास्तव में समुद्र में आने वाले ज्वार के समान है जिसका सही और सकारात्मक प्रयोग करने के लिए कौशल ही नहीं, उद्देश्य का न्यायसंगत होना भी आवश्यक है । मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए श्री दाधीच्ने अन्ना हज़ारे के नेतृत्व में हुए आंदोलन तथा कई अन्य देशों की जनक्रांतियों का ज़िक्र करते हुए कहा कि नया मीडिया युवा हौंसलों और आम लोगों की प्रतिनिधि आवाज़ बनकर उभरा है । श्री दाधीच ने कहा कि न्यू मीडिया किसी उद्देश्य के साथ जितनी तेज़ी से जुड़ता है, उसके उद्देश्यों के प्रति आश्वस्त न होने पर उसी तेज़ी से पीछे भी हट जाता है । उसके समर्थन को स्वाभाविक मानने या हल्के ढंग से लेने की गलती नहीं की जानी चाहिए । चूँकि वह जल्दबाज़ पीढ़ी का माध्यम भी है, इसलिए उसे किसी मक्सद के साथ अनंत काल तक जोड़े रखना कठिन है । उसे लंबे समय तक प्रतीक्षा नहीं कराया जा सकता । इस माध्यम का लाभ उठाने के लिए उसी किस्म का कौशल आवश्यक होता है जो किसी ज्वारभाटे में बदलने से पहले ही उसकी ऊर्जा को सहेजने के लिए चाहिए । बराक ओबामा के चुनाव से लेकर मिस्र की अहिंसक क्रांति तक हमने इसका असर देखा है । लेकिन अन्ना हज़ारे और बाबा रामदेव के आंदोलनों को मिले शुरुआती समर्थन और उसके बाद उनके प्रति न्यू मीडिया में पैदा हुई उत्साहहीन न्यू मीडिया के संशोधनकारी क्षमता का उदाहरण है । चीन, बहरीन और ईरान में भी हम ऐसी मिसालें देख चुके हैं । शशि थरूर और ललित मोदी जैसे लोग जो ट्विटर पर बेहद लोकप्रिय हुए, वे स्थितियाँ बदलने पर उसी के कारण परिदृश्य से ओझल भी हो गए । धीरे-धीरे व्यवस्थाएँ भी इस तथ्य को समझने लगी हैं ।

दाधीच का कहना था कि न्यू मीडिया को पारंपरिक मीडिया के लिए चुनौती या खतरे के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए । हालाँकि उसने पारंपरिक मीडिया के सर्कुलेशन, व्यूअरशिप और विज्ञापन राजस्व को प्रभावित किया है लेकिन आय और सूचनाओं के नए स्रोत भी किए हैं और अपनी तकनीकी सुविधाओं के ज़रिए प्रकाशन उद्योग को ज़्यादा आसान और सुसंगठित बनाने में मदद की है ।

उन्होंने कहा कि न्यू मीडिया समाज और राजनीति में जिन बदलावों का वाहक बना है, उनमें उसने प्रिंट और इलेक्ट्रानिक मीडिया का भी सहयोग लिया है । इसी तरह, पारंपरिक समाचार माध्यम भी कन्टेंट, इंटरएक्टिविटी और नएपन के लिए न्यू मीडिया का सहयोग ले रहे हैं । उन्होंने कहा कि यदि मीडिया जगत समाज में सार्थक और उद्देश्यपूर्ण परिवर्तनों में हाथ बँटाने के प्रति गंभीर है तो मीडिया के विभिन्न स्वरूपों के बीच तालमेल ज़रूरी है । टकराव के बजाए स्वस्थ कनवरजेंस का रास्ता सभी के विकास और लाभप्रदता को सुनिश्चित करेगा ।

विस्फोट.कॉम से साभार

अब हिंदी में उपलब्ध है सेप के सॉफ्टवेयर

विश्व के लगभग 50 देशों में उद्योग, व्यापार और कंपनियों के लिए व्यापार-संचालन हेतु सॉफ्टवेयर बनाने वाले विश्व की सबसे बड़ी कंपनियों में से एक सेप ने अपने सबसे लोकप्रिय ईआरपी सॉफ्टवेयर का हिंदी संस्करण प्रस्तुत कर दिया है जो रसद, भारतीय कराधान, लेखा, कर्मचारी डेता, वेतन पर्ची, ऋण, तथा अन्य सेवाओं से संबंधित कार्यों में सुविधाजनक सिद्ध होगा । यह सॉफ्टवेयर निरंतरता, मानक शब्दावली दिशानिर्देश, प्रासंगिक अनुवाद तथा गुणवत्ता सुनिश्चित करेगा । बैंगलुरू में कंपनी सेप ने हिंदी का यह संस्करण प्रस्तुत किया । इसका विकास सी डेक की सहायता से किया गया । कंपनी को आशा है कि हिंदी संस्करण की प्रस्तुति से भारत में व्यापार और तेज़ी से बढ़ेगा । एक तरफ़ विदेशी सॉफ्टवेयर कंपनियाँ हिंदी में छिपी व्यावसायिक संभावनाओं का आकलन कर हिंदी में सॉफ्टवेयर प्रस्तुत कर रही हैं, दूसरी ओर भारत में विप्रो, इंफ़ोसिस, टीसीएस और टेक महिंद्रा जैसी बड़ी-बड़ी भारतीय कंपनियों को इस तरफ़ देखने की फ़ुर्सत ही नहीं है । हिंदी प्रेम के चलते ये कंपनियाँ आई.टी में हिंदी को बढ़ावा देने की पहल करेगी, ऐसी को उम्मीद नहीं है परंतु यह विश्वास है कि अपने लाभ को बढ़ाने के लिए व्यवसायिकता के नाते कभी न कभी इन सारी कंपनियों को हिंदी की तरफ़ बढ़ना ही होगा ।

हिंदी होमपेज से साभार

हिंदी माध्यम के निखिल ने छुआ सी.ए, परीक्षा का शिखर

चार्टर्ड अकाऊं टेंसी के छात्र निखिल पोद्दार

राजस्थान के एक होनहार विद्यार्थी ने सी.ए (चार्टर्ड अकाऊंटेंसी) की आईपीसीसी (इंटग्रेटड प्रोफ़ैश्नल कंपिटैंस कोर्स) परीक्षा में एक नया इतिहास रच दिया है । मूल रूप से झूंझनू के रहने वाले और जयपुर में पढ़ने वाले निखिल पोद्दार नामक इस विद्यार्थी ने सी.ए की आईपीसीसी परीक्षा राष्ट्रीय स्तर पर पहला स्थान प्राप्त किया है ।

खास बात यह है कि निखिल हिंदी माध्यम के विद्यार्थी है और संभवत: हिंदी माध्यम का पहला ऐसा विद्यार्थी है जिसने इस परीक्षा में सफ़लता के शिखर को छुआ है ।

सी.ए की परीक्षा तीन चरणों में होती है । आईपीसीसी इसका दूसरा चरण है । इसके बाद फ़ाइनल परीक्षा होती है और उसमें सफ़ल होने वाले विद्यार्थी को चार्टेड एकाउंटेंट की उपाधि से नवाज़ा जाता है । देश भर से लाखों विद्यार्थी इन परीक्षाओं में भाग लेते हैं लेकिन इनमें सफ़ल होने वाले विद्यार्थियों की संख्या बहुत कम होती है । निखिल की इस उपलब्धि का महत्व इस मायने में और भी अधिक बढ़ जाता है कि अभी तक इस परीक्षा में पहला स्थान अंग्रेज़ी मीडियम के विद्यार्थियों को ही मिलता रहा है । निखिल ने बताया कि वह हिंदी माध्यम से है इसलिए उसके लिए स्थान हासिल करना अवश्य ही थोड़ा कठिन था लेकिन कड़ी मेहनत और समर्पण ने उसकी राह आसान कर दी । हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों को प्रेरणा देते हुए उसने कहा कि वे अंग्रेज़ी पुस्तकों को देखकर डरें नहीं । आत्मविश्वास के साथ तैयारी करें तो सफ़लता अवश्य मिलती है ।

हिंदी होमपेज से साभार

हाइकु और कविता संग्रह का विमोचन

14 जुलाई 2012 को इंडिया वूमेन प्रेस क्लब, दिल्ली द्वारा आयोजित समारोह में डॉ. अनिता कपूर की दो पुस्तकों 'साँसों के हस्ताक्षर' कविता-संग्रह तथा 'दर्पण के सवाल' हाइकु-संग्रह का विमोचन प्रसिद्ध लेखक श्री बलदेव वंशी जी द्वारा किया गया । यह दोनों पुस्तकें अयन प्रकाशन द्वारा प्रकाशित की गई है । समारोह में लेखिका को शुभकामनाएँ देने वालों में श्रीमती वीरबाला काम्बोज, सुदर्शन रत्नाकर, सुभाष नीरव, सुरेश यादव, डॉ.सतीशराज पुष्करणा, डॉ.जेन्नी शबनम, सीमा मल्होत्रा, सुशीला शिवराण, भूपाल सूद, रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु', अनिल जोशी एवं सरोज शर्मा शामिल थे ।

''डॉ.अनिता कपूर के पूर्व में 4 कविता-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं एवं यह उनका पाँचवा कविता-संग्रह है । 'साँसों के हस्ताक्षर' कवयित्री के दूसरे चरण का मूल्यवान आत्म-सर्जन है'', ये शब्द थे डॉ.बलदेव वंशी जी के । डॉ.वंशी ने आगे कहा कि डॉ.अनिता कपूर ने सरल भाषा के माध्यम से संश्लिष्ट मानव अनुभूति को व्यक्त करते हुए नए शब्द भी रेखांकित किए हैं ।

डॉ.अनिता कपूर ने अपनी कुछ कविताओं का पाठ भी किया । उल्लेखनीय है कि डॉ.अनिता कपूर के लिखे हाइकु अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं, लेकिन संग्रह के रूप में 'दर्पण के सवाल' उनका प्रथम हाइकु-संग्रह है । इसके बाद डॉ.बलदेव वंशी जी ने अपनी कविताओं का भावपूर्ण वाचन करके सबका मन मोह लिया । डॉ.वंशी, डॉ.सतीशराज पुष्करणा और रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' ने हाइकु के बारे में अपने विचार प्रस्तुत किए । बहुत ही आत्मीयतापूर्ण वातावरण में यह कार्यक्रम संपन्न हुआ ।

प्रस्तुति : रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'

हिंदी के प्रथम डी.लिट डॉ पीतांबर दत्त बड़थ्वाल स्मृति दिवस एवं छायाचित्र लोकार्पण कार्यक्रम संपन्न

हिंदी की प्राचीनतम एवं आदि जीवित मातृसंस्था नागरी प्रचारिणी सभा में संत साहित्य के मूर्धन्य आलोचक एवं हिंदी के प्रथम डी.लिट डॉ. पीतांबर दत्त बड़थ्वाल का स्मृति दिवस 24 जुलाई, 2012 को मनाया गया । कार्यक्रम का आरंभ सभा के कुलगीत जय हिंदी जय नागरी से हुआ । सर्वप्रथम इस कार्यक्रम के संयोजक, डॉ. देवेंद्र कुमार सिंह, जो डॉ. बड़थ्वाल के ग्रंथावली हेतु सामग्री का संकलन एवं संपादन का कार्य कर रहे हैं, ने मंचस्थ अतिथियों एवं सभागार में उपस्थित सभी लोगों का स्वागत किया ।

इस समारोह के मुख्य अतिथि श्री चंचल कुमार तिवारी, मंडलायुक्त, वाराणसी मंडल, विशिष्ट अतिथि श्री आर. सी. पंत, पूर्व कुलसचिव कुमाऊ विश्वविद्यालय एवं अध्यक्ष 90 वर्षीय डॉ. अच्युतानंद घिल्डियाल ने की ।

कार्यक्रम के संयोजक, डॉ. देवेंद्र कुमार सिंह ने सर्वप्रथम अपने उद्‌बोधन वक्तव्य में बताया कि हिंदी की इस सबसे प्राचीन संस्था में हिंदी के अधिकांश सेवियों के छायाचित्र लगे हैं पर हिंदी के प्रथम डी.लिट डॉ. पीतांबर दत्त बड़थ्वाल का चित्र न होना दुर्भाग्य है और आज इस कमी की पूर्ति हो रही है । उन्होंने यह भी बताया कि सभा को डॉ. पीतंबर दत्त बड़थ्वाल का चित्र प्रदान किए जाने का संकल्प उनके संबंधी डॉ. डी. पी. जुयाल, भूतपूर्व रक्षा वैज्ञानिक एवं निदेशक रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन, देहरादून ने किया था । जैसा कि सर्वविदित है कि डॉ. बड़थ्वाल वर्ष 1933 में काशी हिंदू विश्वविद्यालय से दी निर्गुण स्कूल ऑफ़ हिंदी पोएट्री विषय पर डॉ. श्यामसुंदरदास के निर्देशन में डी.लिट शोध प्रबंध तैयार किया था । यह विशेष रूप से अवलोकनीय है कि डॉ. बड़थ्वाल के डी.लिट उपाधि प्राप्त होने के पश्चात देश के प्रथम राष्ट्रपति बाबू राजेंद्र प्रसाद जी को डी.लिट उपाधि मिली थी ।

अपने वक्तव्य में डॉ. देवेंद्र कुमार सिंह ने कहा कि डॉ. बड़थ्वाल ने संत साहित्य को आम जनता से जोड़ा जबकि संत साहित्य उपेक्षित पड़ा था । साथ ही साथ उन्होंने नागरी प्रचारिणी सभा में उपलब्ध कुछ दुर्लभ हस्तलेखों को संकलित कराकर पुनर्जीवित किया जो आज सभा की अमूल्य निधि है और इसका लाभ देश-विदेश के अन्वेषक उठा रहे हैं ।

मुख्य अतिथि श्री तिवारी ने अपने संबोधन में कहा कि डॉ. बड़थ्वाल के साहित्य पर अन्वेषण करना शोधकर्ताओं के लिए आवश्यक है क्योंकि उनके कृतित्व की समुचित उपेक्षा हुई है । समारोह की अध्यक्षता करते हुए डॉ. घिल्डियाल ने अपने कुछ संस्मरण सुनाए और कहा कि हिंदी के अनन्य साधक थे डॉ. बड़थ्वाल और उन्होंने निर्गुण काव्यधारा को नई दिशा प्रदान की ।

इस अवसर पर महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. श्रद्धानंद ने उनके व्यक्तित्व पर चर्चा करते हुए भाषा विषयक प्रमुख बिंदुओं पर प्रकाश डाला, तो वहीं, आचार्य रामचंद्र शुक्ल की प्रपौत्री एवं आचार्य रामचंद्र शुक्ल शोध संस्थान की निदेशक डॉ. मुक्ता ने शुक्लजी और बड़थ्वाल जी के सुने हुए संदर्भ पर व्याख्यान दिया ।

कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन प्रो. मल्लिकार्जुन जोशी ने किया और कार्यक्रम का संचालन हिंदी के मूर्धन्य विद्वान रामसुधार सिंह ने किया ।

राकेश कुमार दूबे की रिपोर्ट

'मृत्योर्मामृतम गमय' का विमोचन

अतिथियों को संबोधित करतीं रेणु 'राजवंशी' गुप्ता जी

दिनांक 8 सितंबर 2012 की सुहानी संध्या को सिन्सिनाटी ओहायो के जैन मंदिर में श्रीमती रेणु राजवंशी गुप्ता की पुस्तक मृत्योर्मामृतम गमय का विमोचन पूज्य गुरूदेव श्री तारानन्द जी के करकमलों द्वारा संपन्न हुआ । संचालक तहे श्री राज मांगलिक जी । कार्यक्रम का प्रारंभ श्रीमती अरुणिमा जी की ईश स्तुति गायन से हुआ, तत्पश्चात लेखिका अपनी पुस्तक संबंधी कुछ मुख्य विचारों पर प्रकाश डाला । श्रीमती शोभा पटेल जो लेखिका की सहयोगी और सह लेखिका भी हैं, ने अपने विचारों की कड़ी जोड़कर एक सशक्त श्रृंखला तैयार करा दी और इनकी तृतीय सह लेखिका मित्र शोभा पटेल ने मिलकर इस श्रृंखला को सुदृढ़ बनाते हुए मूल विचारों को पुस्तकाकार रूप प्रदान करने में अपना अतुल योगदान दिया । इस पुस्तक का मूल मंतव्य कैंसर जैसे दु:साध्य रोग से पीड़ित एक लड़की की जीवन यात्रा को, स्थूल जीवन धरातल से लेकर, दवाइयों, कठिनाइयों को झेलती हुई, उसकी सूक्ष्म आध्यात्मिक यात्रा में पर्यावसान कराना है । साथ ही इस रोग से पीड़ित स्वामी रामकृष्ण परमहंस, महान पुरुष बाबा आम्टे, महर्षिरमण एवं गुरू गोलवलकर जी जैसे महान पुरुषों के विचार व्यक्त कर रोग की दु:सहता को यह कहकर नकारा है कि रोग केवल इस स्थूल शरीर का है, आत्मा को यह छू भी नहीं सकता । तत्पश्चात पुस्तक विमोचन करते हुए यथावसर भारत से आए हुए परम श्रद्धेय गुरुवर ने लेखिका के सामाजिक कार्यकर्ता होने के साथ साथ उनके आध्यात्मिक पक्ष की सूक्ष्मता को उजागर करते हुए उन्हें अपना आशीर्वाद दिया ।

पुस्तक लोकार्पण

उसके पश्चात एक कवि सम्मेलन आरंभ हुआ । संचालक थे श्री विपिन जिन्दल, जिन्होंने कवि मन्तव्यों को भांपते हुए बिच बीच में चुटकुलों एवं हास्य व्यंग्य की फुलजड़ियों से श्रोताओं को आनंदित किया । डेटरोयट से आए कवि श्री सतीश व्यास, श्री दिनेश बिल्लौर एवं श्री राजन, कोलंबिया से आई हुई श्रीमती अरुणिमा सिन्हा, क्लीवलैंड से आए श्री रमेश जोशी (हिंदी विश्वा के नए संपादक) एवं स्थानीय कवि श्रीमती नसीम, श्रीमती लावण्या शाह, श्री केदार वर्मा तथा श्रीमती रेणु राजवंशी गुप्ता जी ने अपना काव्य पाठ कर इस सुहानी संध्या को और भी रंगीन बना दिया ।

इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से आमंत्रित श्री माइक (ए.टी.आर.यू.एम. कैंसर अस्पताल के अधिकारी) को ससम्मान पुस्तक में आई धन राशि भेंट की गई ।

ओहायो से डॉ. सरोज अग्रवाल की रिपोर्ट

डॉ.दिनेश्वर प्रसाद
कामिल बुल्के के सहयोगी नहीं रहे

हिंदी के जाने-माने विद्वान, भाषाविद, फ़ादर कामिल बुल्के के सहयोगी रहे डॉ.दिनेश्वर प्रसाद का निधन हो गया । वे 80 वर्ष के थे । उनका जन्म 1932 को बिहार के मुंगेर ज़िले के मयदरियापुर गाँव में हुआ था । अपने पीछे पत्नी सहित पुत्र-पुत्रियों का भरा-पूरा संसार छोड़ गए । कुछ समय से वे अस्वस्थ थे । उनके निधन पर राँची का हिंदी जगत स्तब्ध और शोकाकुल है । जैसे ही उनके निधन की खबर मिली, हिंदी के विद्वान,लेखक उनके आवास पर पहुँचने लगे । लोगों ने कहा कि उनके निधन से एक युग का अवसान हुआ है । उन्होंने के काव्य, अनुवाद, आलोचना के साथ ही संपादन में भी अहम भूमिका निभाई है । उन्हें राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम के हाथों राहुल सांस्कृत्यायन पुरस्कार, साहित्य सेवा सम्मान, राधाकृष्ण पुरस्कार तथा अक्षर कुंभ सम्मान प्राप्त हो चुके हैं ।

रांची से संजय कृष्ण की रिपोर्ट

लोकार्पण कार्यकरम

8 सितंबर को गोरखनाथ मंदिर, गोरखपुर के ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ स्मृति सभागार में श्रीरामजन्मभूमि समिति के श्रद्धेय महंत अवेद्यनाथजी के जीवन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर केंद्रित, प्रभात प्रकाशन द्वारा तीन खंडों में प्रकाशित ग्रंथ 'राष्ट्रीयता के अनन्य साधक महंत अवेद्यनाथ' का लोकार्पण समारोह आयोजित किया गया । समारोह के मुख्य अतिथि पूर्व उपप्रधानमंत्री माननीय श्री लालकृष्ण आडवाणीजी थे । अध्यक्षता श्री मस्तनाथ मठ अस्थल्बोहर, रोहतक के माननीय महंत एवं पूर्व विधायक श्री चाँदनाथजी महाराज ने की । इस गरिमामयी समारोह में बड़ी संख्या में संतवृंद, लेखक-पत्रकार, समाज के सभी वर्गों के गणमान्य महानुभाव एवं मीडियाकर्मी उपस्थित थे । इस अवसर पर श्री लालकृष्ण आडवाणी ने कहा कि भविष्य भारत का है । 21वीं सदी को भारत की सअदी बनाएँ । इस गरिमामयी समारोह में बड़ी संख्या में संतवृंद, लेखक-पत्रकार, समाज के सभी वर्गों के गण्यमान्य महानुभाव एवं मीडियाकर्मी उपस्थित थे ।

2 सितंबर को लखनऊ में उ.प्र. हिंदी संस्थान के निराला सभागार में आयोजित कार्यक्रम में विधान परिषद के सदस्य श्री हृदय नारायण दीक्षित की पुस्तक 'मधुविद्या' का विमोचन पूर्व केंद्रीय मंत्री व डॉ.मुरली मनोहर जोशी ने किया । कार्यक्रम की अध्यक्षता विधानसभा के अध्यक्ष श्री माता प्रसाद पांडेय ने की । इस अवसर पर श्री ओम प्रकाश पांडेय ने अपने विचार व्यक्त किए ।

साहित्य अमृत से साभार

संपादकीय

भारत की स्वतंत्रता के बाद 14 सितंबर, 1949 को संविधान सभा ने यह निर्णय लिया था कि हिंदी की खड़ी बोली ही भारत की राजभाषा होगी । इसी महत्वपूर्ण निर्णय के महत्व को प्रतिपादित करने तथा हिंदी के क्षेत्र में प्रसारित करने के लिए राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के अनुरोध पर सन् 1953 से संपूर्ण भारत में 14 सितंबर को प्रतिवर्ष हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है । भारत की तरह मॉरीशस में भी भाषा की दृष्टि से विभिन्न संस्थाओं द्वारा हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए हिंदी दिवस, हिंदी सप्ताह, सम्मेलन, प्रतियोगिताएँ आदि आयोजित किए जाते हैं । पिछले कुछ महीनों से हिंदी की कई अंतर्राष्ट्रीय गतिविधियाँ आयोजित होती आ रही हैं जिनमें सितंबर में जोहान्सबर्ग, दक्षिण अफ़्रीका में आयोजित 9वाँ विश्व हिंदी सम्मेलन प्रमुख रहा । विश्व भर से आए हिंदी प्रेमियों, हिंदी विद्वानों का यह जुटाव महत्वपूर्ण रहा ।

हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में बढ़ावा देने हेतु सिनेमा जगत, व्यापार, इंटरनेट आदि क्षेत्रों में कार्यरत कुछ प्रतिभावान हिंदी सेवी अपना योगदान दे रहे हैं, साथ ही साथ भारत से बाहर के देशों में हिंदी साहित्य रचने वाले लेखक हिंदी के प्रचार-प्रसार में जुटे हुए हैं । आज भारत से बाहर का हिंदी साहित्य बहुत समृद्ध हो चुका है । देश-विदेश में इन रचनाओं तथा इनके रचनाकारों की प्रसिद्धि बढ़ रही है । हिंदी पुस्तकें हों, विदेश में हिंदी पाठ्यक्रम हो या फिर इंटरनेट ही क्यों न हो, हिंदी जगत में इनके योगदान को नकारा नहीं जा सकता । विश्व हिंदी समाचार के प्रत्येक अंकों की भाँति इस 19वें अंक में भी इन रचनाओं में से कम से कम किसी एक पर हमने समाचार अवश्य प्रकाशित किया है । विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा प्रकाशित विश्व हिंदी समाचार का यह 19वाँ अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है ।

मॉरीशस में विभिन्न संस्थाओं द्वारा हिंदी दिवस का आयोजन, ऋतुराज सम्मान, अंतर्राष्ट्रीय ब्लॉगर सम्मेलन, नॉर्थ कैरोलाइना में लर्निंग सेंटर का हिंदी कार्यक्रम आदि सूचनाएँ इस अंक में प्रकाशित हैं जो अवश्य ही हिंदी प्रेमियों के लिए ज्ञानवर्धक तथा दिलचस्प होंगी । 24 सितंबर को विश्व हिंदी सम्मेलन के समापन समारोह में हिंदी के प्रचार-प्रसार में वृद्धि लाने के लक्ष्य से कई संकल्प लिए गए जिनमें से एक है विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा विभिन्न देशों के हिंदी शिक्षण से संबद्ध विश्वविद्यालयों, पाठशालाओं, शैक्षणिक संस्थाओं, हिंदी विद्वानों, लेखकों और हिंदी के प्रचार-प्रसार से संबंधित लोगों का डाटाबेस तैयार करना । विश्व हिंदी सचिवालय अपने पाठकों से अनुरोध करता है कि उन सभी हिंदी संस्थाओं की सूची सचिवालय को भेजें ताकि इस कार्य में अधिक से अधिक सुविधा हो और हिंदी सेवियों की प्रसिद्धि बढ़े । इसी तरह धीरे-धीरे मित्र देशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार के चलते वह दिन दूर नहीं जब संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषाओं में हिंदी अपना स्थान बना पाएगी ।

श्रीमती पूनम जुनेजा
महासचिव

प्रधान सपादक
श्रीमती पूनम जुनेजा
संपादक
श्री गंगाधरसिंह सुखलाल
संपादन सहयोग
श्री जिष्णु होरिशरण, सुश्री श्रद्धांजलि हजगैबी
सुश्री प्रीति सियांबर, श्रीमती विजया सरजु
विश्व हिंदी सचिवालय
स्विफ्ट लेन, फ़ॉरेस्ट साइड, मॉरीशस
World Hindi Secretariat
Swift Lane, Forest Side, Mauritius
Phone (230) 676 1196
Fax (230) 676 1224
E-mail : info@vishwahindi.com
Website : www.vishwahindi.com
Printed by
BAHADOOR PRINTING LTD.
Avenue St. Vincent de Paul - Pailles
Tel: 208 1317

9वां विश्व हिंदी सम्मेलन : कुछ झलकियाँ